CAREER & EDUCATION

अमर उजाला उड़ान

वर्ष 09 | अंक 08 | बुधवार | 17 फरवरी 2021 | ₹1

शतरंज से समझें

बिजनेस के गुर

कॅरिअर मंत्रा

तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था में वित्तीय सलाहकार की संभावनाएं बढ़ी हैं...

PAGE 03

PAGE 10

एजुकेशन

अपशिष्ट पुनर्चक्रण रोजगार सृजन के मामले में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है...

VISIT…

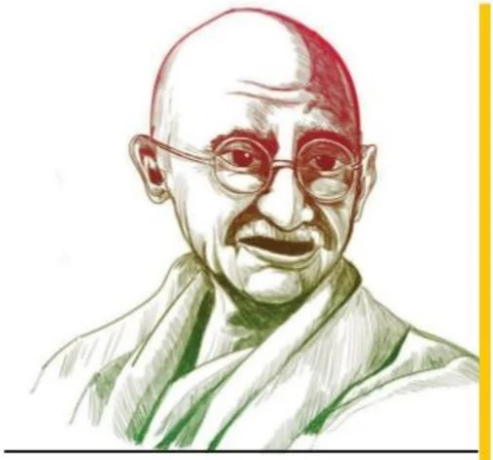

लोग मुट्ठी भर ही हों, लेकिन संकल्पवान हों और उनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था हो, तो वे इतिहास को भी बदल सकते हैं।
-महात्मा गांधी

चुनौतीपूर्ण समय का साहस से करें सामना

आज के समय में बदलाव को समझने और अपनाने के प्रति अवश्य ध्यान केंद्रित किया जाना होनी चाहिए क्योंकि हमारे चारों ओर परिवर्तन की दर पहले से कहीं अधिक तेज हो चुकी है। परीक्षा में नित नए बदलाव हो रहे हैं तो कार्यस्थल पर आने वाली नई तकनीक नई-नई चुनौतियां पेश कर रही हैं। जो लोग अपने कंफोर्ट जोन में रहने के आदि होने के कारण इन बदलावों को अपनाने से दूरी बना कर चलते हैं, उन्हें व्यवस्था से बाहर होने में ज्यादा समय नहीं लगता। वहीं चुनौतियों को आगे बढ़कर अपनाने की मानसिकता वाले व्यक्ति को न केवल नई चीजों को जानने-समझने का अवसर मिलता है बल्कि वह अपने भीतर अनुकूलन की अद्भुत क्षमता का विकास कर लेता है। यही अनुकूलता उसके स्थायित्व और प्रगति में मेरुदंड का कार्य करती है।

प्रकृति ने हर किसी को अनुकूलता की आधारभूत क्षमता प्रदान की है, लेकिन जो लोग अपनी अनुकूलता को अधिक से अधिक बढ़ाने के लिए प्रयासरत होते हैं, वे प्रतिद्वंद्वी से कम मजबूत और कम बुद्धिमान होते हुए भी शीघ्र सफलता पाते हैं और उनकी यह सफलता औरों के मुकाबले कहीं अधिक टिकाऊ भी होती है। अनुकूलता के विस्तार के लिए जरूरी है कि चुनौतियों से जी चुराने के बजाय साहसपूर्वक उनका सामना करें और कार्यों की बदलती प्राथमिकता के प्रति सकारात्मक नजरिया अपनाते हुए आगे बढ़ें।

अ अमर उजाला
समूह का प्रकाशन
नवोन्मेषक स्व. अतुल माहेश्वरी

अमर उजाला लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक वीरेंद्र सिंह पठानिया द्वारा अमर उजाला लिमिटेड, सी-21, सेक्टर 59, नोएडा-201301 (गौतमबुद्ध नगर) से प्रकाशित एवं इम्प्रेशन्स प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18, 19, 20, सेक्टर-59, नोएडा-201301 (गौतमबुद्ध नगर) से मुद्रित।

संपादक. देव प्रकाश चौधरी
फोन. 120-4694000, 2583354 फैक्स. 0120-2587325

RNI No. UPHIN/2012/48168
ई-मेल. asktoudaan@amarujala.com

बर्षा छाबरिआ
आर. जे., कम्युनिटी रेडियो

वित्तीय प्रबलता के क्षेत्र में कॅरिअर

टैक्स बचाने, सबसे अच्छी बीमा योजना में निवेश करने, घर खरीदने इत्यादि से संबंधित सलाह में फाइनेंशियल एडवाइजर का विशेष महत्व है...

फाइनेंसियल एडवाइजर यानी वित्तीय सलाहकार का कॅरिअर एक ऐसे सलाहकार का कॅरिअर है, जहां आप अपने ग्राहकों को उनकी जमा पूंजी की बढ़ोतरी, निवेश के विकल्प, संभावित जोखिम आदि से बचने के उपाय इत्यादि की सलाह देना कर व्यक्ति विशेष की वित्तीय सुदृढ़ता के लिए कार्यरत होना है। तेजी से भागती दुनिया में लोगों को वित्तीय सलाह की जरूरत होती है जैसे- नए घर या कार खरीदने के लिए बचत कैसे करें, सेवानिवृत्ति की योजना या सर्वोत्तम बीमा पॉलिसी प्राप्त करें, कहां निवेश करें, टैक्स कैसे बचाएं, सबसे अच्छी बीमा योजना, कौन सी निधि निवेश करने के लिए, किस स्टॉक को रखना है, कौन सा बेचना है, आदि सवालों के जवाब वित्तीय सलाहकार की जॉब प्रोफाइल के तहत आते हैं।

वित्तीय सलाहकार की विशेषज्ञता

- टैक्स अर्थात कर नियमों की पूरी-पूरी जानकारी होना
- इंश्योरेंस की जानकारी
- लघु अवधी और दीर्घ अवधि निवेशों का ज्ञान
- क्लाइंट के वित्तीय लक्ष्यों की परख
- वित्तीय जार का विश्लेषण
- इन्वेस्टमेंट प्लानिंग अर्थात जायदाद आदि की योजना में निपुणता
- शिक्षा की योजना के बारे में ज्ञान
- रिटायरमेंट के उपरांत वित्तीय प्रबंधन
- इन्वेस्टमेंट मैनेजमेंट में प्रखरता
- वित्तीय कानून का ज्ञान

वित्तीय सलाहकार के गुण

- सुन्दर कम्युनिकेशन स्किल्स
- पारस्परिक स्किल्स
- ग्राहक सेवा कौशल
- कॉन्फिडेंस
- प्रस्तुतीकरण
- उद्यमिता कौशल
- विक्रय के गुण

शैक्षणिक योग्यता

वित्त या लेखा में कम से कम स्नातक की डिग्री के अतिरिक्त आपके पास कारोबार से संबधित ज्ञान, कराधान, अकाउंटिग, और बीमा से जुड़े विषयों की जानकारी होनी चाहिए। अगर आपने 12वीं कक्षा में कॉमर्स के साथ गणित की पढ़ाई है, तो आप स्नातक कॉमर्स विषय से कर सकते हैं। इसके बाद आप पारस्नाचक स्तर पर क्षेत्र की विशेषज्ञता हासिल कर सकते हैं। संभव हो तो आप सीए-सीएस की पढ़ाई के लिए भी जा सकते हैं। वित्तीय अवधारणाओं को समझाने के लिए बोलने का कौशल होना चाहिए।

प्रिय पाठकों...

उड़ान में प्रकाशित लेख व जानकारियां कॅरिअर एवं एजुकेशन एक्सपर्ट्स द्वारा उपलब्ध कराई जाती हैं। हम पूरी सावधानी से इन्हें प्रकाशित करते हैं। फिर भी, किसी जानकारी या लेख में आपको कोई त्रुटि लगे या उड़ान को बेहतर बनाने के लिए आपका कोई सुझाव/शिकायत हो, तो आप हमसे asktoudaan@amaru-jala.com पर संपर्क कर सकते हैं।
- धन्यवाद।

शतरंज के बोर्ड में 64 खाने होते हैं और इसमें 32 मोहरे होते हैं। ऐसा क्या है इस खेल में, जो हमें बिज़नेस के लिए बहुत सारा प्रशिक्षण देता है और बहुत से गुर सिखाता है....

कॅरिअर के इस दौर में

शतरंज की बिसात पर बिजनेस की चालें

डॉ. राजेश कुमार
निदेशक (शैक्षिक व व्यावसायिक शिक्षा - पूर्व)

जिंदगी में काम शुरू करना, कमाई करना, परिवार बनाना, अपने लिए सुख-सुविधाएं जुटाना सरल बात है, और इससे जिंदगी आराम से निकल ही जाती है। लेकिन जिंदगी के लिए योजना बनाना, अपने फाइनेंस की व्यवस्था करना, अपनी जिंदगी में महत्वाकांक्षाएं रखना, और फिर उस दिशा में काम शुरू करने का मतलब होता है कि हम रणनीति की बात कर रहे हैं, और शतरंज का खेल खेलने के लिए रणनीति की बहुत आवश्यकता होती है। शतरंज आपको प्लान तैयार करना भी सिखाता है।

बिग पिक्चर का अनुभव

शतरंज में इसे पूरा बोर्ड देखना कहा जाता है, और जिंदगी में पूरा चित्र या बिग पिक्चर देखना कहा जाता है। अगर आप केवल अपनी तरफ के बोर्ड को देख रहे हैं और विचार कर रहे हैं कि आपको कौन-सी चाल चलनी है, तो आप अपने मिशन में विफल हो सकते हैं। अगर आप सिर्फ अपनी तरफ के मोहरों को ही देखने में लगे रहते हैं, तो आप सामने के खिलाड़ी की चाल को नहीं समझ पाते। आपको झटका तब लगता है, जब वह अपनी चाल चलता है और आपकी सारी योजनाएं धरी-की-धरी रह जाती हैं। हमारे काम और जिंदगी में अकसर ऐसा होता है कि अपने बिजनेस प्लान में ही इतने खोए रहते हैं कि आपको पूरे बिजनेस के क्षेत्र का अंदाजा नहीं हो पाता और आप अपने काम और योजनाओं में पिछड़ते चले जाते हैं। शतरंज का खेल हमें सिखाता है कि हमें पूरी की पूरी तस्वीर नजर में रखनी है। सफल होने के लिए हमें न केवल खुद को, बल्कि पूरी तस्वीर को, और उसमें खुद को देखने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा सफल होने पर आगे का रास्ता और विफल होने पर अन्य विकल्प तैयार रखना सीखते हैं।

निर्णय और कार्यान्वयन

शतरंज में आपको अपनी चाल चलने से पहले स्थितियों की अच्छी तरह समीक्षा करनी पड़ती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप हमेशा के लिए इसी पर सोचते रहें। आपको जल्दी से सोचकर फ़ैसला करना पड़ता है और फिर एक्शन के रूप में अपनी चाल चलनी होती है। यह ख़ास तौर से शतरंज के टूर्नामेंट के लिए महत्वपूर्ण होता है, जब पहली 20 चालों के लिए समय निर्धारित होता है। अगर खिलाड़ी अपनी पहली चालों में धीमे रहते हैं, तो उन्हें अपनी बाद की चालों के लिए कम समय मिलता है, और अगर घड़ी शून्य पर पहुंच जाती है, तो उन्हें गेम खोना पड़ता है।

सही कदम उठाने का महत्व

शतरंज में इस बात से बहुत फर्क पड़ता है कि आप पहली चाल कैसे चलते हैं, क्योंकि इसी के आधार पर आगे का गेम और सारी चालें चली जाती हैं। यही कारण है कि शतरंज की पहली चाल सोच-समझकर, और आगे की कई चालों, और विरोधी की संभावित चालों को सोचकर चलनी चाहिए। हमारे जीवन के बारे में भी यही बात सही है। शोध से पता चलता है कि जब आप किसी से मिलते हैं, तो पहले 7 सेकंड इस बात को निर्धारित करते हैं कि लोगों पर आपका क्या असर होने वाला है। व्यापार की सफलता भी इसी पर निर्भर है।

प्रतिद्वंदी की तरह सोचिए

शतरंज के अच्छे खिलाड़ी हमेशा यह सोचते हैं कि उनका विरोधी क्या कर रहा है, उसकी योजनाएं क्या हैं, उसके बड़े प्लान क्या है, वह मोहरे कैसे चला रहा है। और इस तरह वे एक तरह से अपने विरोधी के दिमाग में ही घुस जाते हैं। रणनीति के विशेषज्ञों ने सफल रणनीति के लिए अकसर इसी विधि का समर्थन किया है। सन त्सु से लेकर डॉन कॉर्लियोने तक ने यही सलाह दी है कि आपको अपने दुश्मन की तरह सोचना है। सन त्सु ने कहा है कि अपने दुश्मनों को जानने के लिए आपको अपना दुश्मन बनना होगा। हो सकता है कि हम सोचें कि हमारे तो कोई दुश्मन नहीं हैं, तो फिर इसका क्या लाभ? लेकिन जब हम अपने वेतन को बढ़ाने या तरक्की का प्रस्ताव करते हैं, या अपने प्रतिद्वंद्वी से आगे बढ़ना चाहते हैं, तो दरअसल हम एक तरह से अपने दुश्मन से ही मोलभाव कर रहे होते हैं। यहां शतरंज की शिक्षा काम आती है।

एक्शन और भावनाएं

शतरंज में कभी-कभी हम विरोधी पर आक्रमण करने या उसका मोहरा मारने के लिए इतने उत्साहित हो जाते हैं कि यह देखना भूल जाते हैं कि हमारे लिए क्या जाल बुना गया है। यह उत्साह हमारे फ़ैसले के रास्ते में आ जाता है, और हमें गलत दिशा में ले जाता है। शतरंज के अच्छे खिलाड़ी जानते हैं कि किस तरह अपनी भावनाओं पर काबू रखना है और अपने एक्शन में उनके हस्तक्षेप को दूर रखना है। फिल्म डायरेक्टर स्टेनली क्यूब्रेक ने कहा है कि उन्हें सफल डायरेक्टर बनाने में शतरंज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शतरंज ने उन्हें धैर्य का रास्ता दिखाया और भावनाओं को हावी न होने देना सिखाया।

त्याग करने की अहमियत

जब शतरंज में हमारे मोहरे मरते जाते हैं, तो हमें दुख होता है। जब हमारे छोटे मोहरे पिटते हैं, तो हमें कम दुख होता है, लेकिन अगर वजीर या हाथी मरता है, तो हमें बहुत दुख होता है। लेकिन अनुभवी खिलाड़ी जानते हैं कि उन्हें युद्ध जीतने के लिए लड़ाइयां हारनी होंगी। शतरंज में कभी-कभी लाभ प्राप्त करने के लिए हमें थोड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। कभी-कभी हम शिकायत करते हैं कि हमें लंबे समय तक काम करना पड़ता है या छुट्टियां नहीं मिलती। लेकिन रणनीति की दृष्टि से यह भविष्य में लाभकारी होता है। ऐसे ही सफल व्यापारी जानते हैं कि किस तरह से छोटे-छोटे त्याग करना उनकी बड़ी सफलता के लिए बहुत जरूरी होता है। -शेष पेज 9 पर

शतरंज हमें ब्लफ करना सिखाता है

यह पोकर, बॉक्सिंग, मार्शल आर्ट, और युद्ध की तरह ही है। यह इस तरह से होता है कि आप एक चाल चलते हैं और फिर आपका विरोधी अपनी चाल चलता है। और इसके तुरंत बाद फुर्ती से आप अपनी असली चाल चलते हैं, और अपने विरोधी को हक्का-बक्का करके विजय की तरफ बढ़ते हैं, क्योंकि आपकी पहली चाल वास्तव में ब्लफ था। बिजनेस में भी विरोधी के सामने चीजें अचानक पेश कर आप अपने क्षेत्र में आगे बढ़ने का रास्ता निकाल सकते हैं।

शतरंज हमें पैटर्न सीखने में मदद करता है

हमने अभी कहा है कि शतरंज में अपने विरोधी को समझने की जरूरत होती है। यानी यह समझना कि वे क्या सोच रहे हैं, उनकी अगली चाल क्या होगी। जब आप ऐसा करते हैं, तो वास्तव में आप पैटर्न की पहचान कर रहे होते हैं। इससे हमें भविष्य में बहुत मदद मिलती है। आप स्टॉक के क्षेत्र में देखें, तो वहां शेयर के उतार-चढ़ाब का पैटर्न समझना मायने रखता है।

अंग्रेजी बोलने की आदत विकसित करने में रेडियो सुनना और टी.वी. देखना हमारी कमाल की सहायता करते हैं...

रेणु जैन

इस अंदाज में सीखें स्पोकन इंग्लिश

यूं तो हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी के महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। पर अंग्रेजी भाषा का महत्व भी बढ़ता जा रहा है। युवाओं के अलावा समाज में जो अन्य पढ़े-लिखे लोग हैं उनके लिए भी अब स्पोकन इंग्लिश में निपुण होना आवश्यक हो गया है।

हिचक छोड़ें

अंग्रेजी बोलने या इस भाषा में संवाद करने में नए-नए लोगों को जिस सबसे बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है वह है हिचक। यह हिचक एकदम से तो नहीं जाती मगर सतत प्रयास करने से इसे दूर किया जा सकता है। इसके लिए आप ऐसे लोगों से सवांद करें जो आपको प्रोत्साहित करते हों।

शब्दकोष बढ़ाएं

अंग्रेजी में बातचीत करने या स्पोकन इंग्लिश के लिए आपको अपना अंग्रेजी का शब्दकोष बढ़ाना पड़ेगा। आप यदि इंग्लिश का कोई समाचार-पत्र नियमित पढ़ने की आदत डालें तो आपका शब्दज्ञान लगातार बढ़ने लगेगा। कम से कम पांच शब्द रोज एक नोटबुक में नोट लिया करें। उनके अर्थ हिन्दी या अपनी मातृभाषा की डिक्शनरी में से देखकर उन्हें भी नोट करें। इस तरह आप हर महीने 150 नए शब्द नोट कर लेंगे। इन 150 शब्दों में से 50 शब्द भी आपको याद रहे तो सोचिए आपका शब्द ज्ञान कितनी तेजी से बढ़ रहा है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति का काम किसी भी भाषा में 500-700 शब्दों के ज्ञान से चल सकता है।

व्याकरण का ज्ञान अर्जित करें

किसी भी भाषा में सबसे प्रमख होता है उसका व्यारकण। स्पोकन इंग्लिश के लिए भी यह जरूरी है कि आपको उसके व्याकरण का भलि-भांति ज्ञान हो। यह व्याकरण आप घर बैठे अंग्रेजी व्याकरण की कोई प्रचलित पुस्तक लाकर प्राप्त कर सकते हैं। अंग्रेजी भाषा का व्याकरण थोड़ा टेढ़ा है इसलिए इसमें संयम और दैनिक अभ्यास की जरूरत है। यदि आपने संयम और दैनिक अभ्यास से काम लिया तो आपकी वाह-वाही होना तय है। यदि आप व्याकरण में कमजोर पड़े तो अंग्रेजी भाषा के जानकार आपका मजाक भी उड़ा सकते हैं इसलिए इस बारे में पूरी सावधानी बरतें।

उच्चारण पर ध्यान देना आवश्यक

अंग्रेजी एक ऐसी भाषा है जिसमें कई शब्दों के उच्चारण गलत किए जाते हैं। कई लोग लेडिस को लेडिसों, हार्ट को हार्ड, ब्लड प्रेशर को ब्लेड-प्रेश्र, स्टॉल्स् को स्ऑलें और बुक्स को बुकें बोलते हैं। इस तरह के गलत उच्चारण से आप उपहास के पात्र बनते हैं और आपकी काबिलियत पर भी शक किया जाने लगता है। इसलिए आवश्यक है कि भले ही आपको धीरे बोलना पड़े लेकिन आप एकदम सही बोलें। अपने उच्चारण में गुणात्मक सुधार लाने के लिए आप अपनी आवाज टेप रिकॉर्डर में टेप कर सकते हैं। उसे स्वयं ही बाद में सुनें इससे आपको अपने आप अपनी गल्तियों का पता चल जाएगा।

रेडियो सुनें और टी.वी. देखें

अंग्रेजी बोलने की आदत विकसित करने में रेडियो सुनना और टी.वी. देखना हमारी कमाल की सहायता करते हैं। टी.वी. और रेडियो पर परफेक्ट अंग्रेजी बोलने वाले लोगों को ही प्रस्तुत किया जाता है। उन्हें ध्यान से सुनने से हमारी कई तरह से मदद होती है। आप यह भी कर सकते हैं कि पहले हिंदी और फिर अंग्रेजी में समाचार सुनें। इससे आपको सही बात समझ में आ जाएगी। इस आदत से आप में स्पोकन इंग्लिश की एक दृढ़ शैली विकसित होगी।

बहुत जरूरी है सेल्फ मार्केटिंग

प्रोफेसर डॉ. अजय जोशी
कॅरिअर काउंसलर

वर्तमान समय में जब सभी वस्तुओं, सेवाओं, संगठनों, निर्माताओं, संस्थाओं आदि द्वारा प्रभावी मार्केटिंग तकनीकें अपनायी जा रही है। तब एक व्यक्ति के लिए भी खुद अपनी सेल्फ मार्केटिंग अर्थात् आत्म विपणन जरूरी हो गया है। प्रायः देखा गया है कि वे ही व्यक्ति सफल होते है जो खुद को दूसरों के सामने सही ढंग से प्रस्तुत कर पाते हैं। अपनी योग्यता कुशलता अनुभव, ज्ञान, रुचि आदि की प्रभावी ढंग से दूसरों के सामने प्रस्तुति ही सेल्फ मार्केटिंग है। इस सम्बन्ध में जॉन जेस्तिच का कथन महत्वपूर्ण है उनका मानना है कि सेल्फ मार्केटिंग खुद की ब्रांडिंग है जो व्यक्ति की लोगों में पहचान स्थापित करने, लोकप्रियता बढाने और विश्वनीयता बनाये रखने में सहायक होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सेल्फ मार्केटिंग उपयोगी है। चाहे शिक्षण हो या प्रशिक्षण, चाहे मित्र रिश्तेदार या समाज सभी में वे ही व्यक्ति सफल हो पाते हैं तो प्रभावी ढंग से अपने आपको प्रस्तुत कर पाते हैं। कॅरिअर में तो सेल्फ मार्केटिंग बहुत ही जरूरी है। इसके बिना अच्छा रोजगार नहीं मिल पाता तथा मिल भी गया तो अधिक सफलता नहीं मिल पाती। आप में योग्यता और क्षमता है, लेकिन दूसरों के सामने इसे प्रभावी तरीके से प्रस्तुत नहीं किया तो 'जंगल में मोर नाचा किसने देखा'' वाली कहावत चरितार्थ हो जायेगी।

कॅरिअर में सेल्फ मार्केटिग नौकरी के लिये अप्लाई करते समय ही प्रारंभ होती है। जब आप अपना आवेदन कर रहे हैं तो उसमें अपनी योग्यता, कुशलता, क्षमता को व्यक्त करना जरूरी है। आवेदन तथा बायोडेटा इस प्रकार से होना चाहिये जिससे कि जिस रोजगार हेतु आप आवेदन कर रहे है उस जॉब के प्रति आपकी रुचि व क्षमता के बारे में नियोक्ता आश्वस्त हो जाय। अपनी शैक्षणिक और प्रशिक्षण संबंधी योग्यताएं और अनुभव इस प्रकार से व्यक्त करें जिससे संभावित नियोक्ता को लगे कि हां यह व्यक्ति मेरे संगठन के लिये सबसे उपयुक्त रहेगा। बायोडाटा आकर्षक तरीके से तैयार करना तथा उसमें सभी सूचनाएं सही तथा व्यवस्थित ढंग से प्रकट करना भी जरूरी है। सेल्फ मार्केटिंग का यह मतलब कतई नहीं है कि आप गलत, भ्रामक तथा बढ़ा चढ़ा कर जानकारियां दे। ऐसी जानकारियां न केवल आपकी इमेज को खराब कर सकती है वरन् कई बार कानूनी मामलों में उलझा भी सकती है। ऐसे कई मामले आ चुके हैं जब आवेदन में दी गयी झूठी सूचनाओं के कारण नियुक्ति के बाद भी हटा कर उनके विरूद्ध कानूनी कार्यवाही की जा चुकी है। इसलिये इस बात को ध्यान में रखा जाना जरूरी है।

आपकी नियुक्ति हो जाने के बाद भी सेल्फ मार्केटिंग काम आती है। काम के प्रति आगे बढ़ कर रुचि प्रकट करना, कार्य में पूरी निष्ठा व लगन को दर्शाना भी आपके कॅरिअर के लिये उपयोगी हो सकता है। पूरे कॅरिअर के दौरान खुद को साबित करने के लिये भी निरंतर सेल्फ मार्केटिंग जरूरी है।

कुल मिलाकर सेल्फ मार्केटिंग सफल कॅरिअर का आधार है। बस इस बात का जरूर ध्यान रखा जाना चाहिए कि यह आत्म प्रवंचना में न बदल जाय। आपकी बातों में विश्वसनीयता नहीं रहे और लोग आपकी बातों को महत्व देना बंद कर दे।

इंटरव्यू और जीडी में उपयोगी

सेल्फ मार्केटिंग इंटरव्यू और ग्रुप डिस्कशन के समय भी आती है। साक्षात्कारकर्ता के समक्ष अपनी संप्रेषण कुशलता का परिचय दें तथा अपनी योग्यताओं, क्षमताओं तथा पद के कार्यो को करने की उत्सुकता को प्रकट करें। साक्षात्कार करने वालों को यह लगना चाहिये कि आप पूरे मन से आवेदित पद पर कार्य करने हेतु तत्पर हैं। यदि आप साक्षात्कारकर्ता को यह विश्वास दिलाने में सफल हो गये कि यह व्यक्ति पद का दायित्व सही ढंग से निर्वाह कर सकता है और यही व्यक्ति पद के लिये सर्वाधिक उपयुक्त है तो आपका चयन पक्का है लेकिन इसका भी पूरा ध्यान रखा जाना चाहिये कि साक्षात्कार के दौरान अत्यधिक बड़बोलापन नजर नहीं आये। उसे उनको यह नहीं लगना चाहिए कि यह प्रार्थी कुछ ज्यादा ही फेंक रहा है।

अपने सामान्य ज्ञान को बेहतर करने के लिए जरूरी है कि पिछली परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों का पैटर्न समझा जाए...

सूफ़ी संत हमीदुद्दीन दरगाह निम्न में से किस दुर्ग में स्थित है? (राजस्थान मूल्यांकन अधिकारी परीक्षा 2020)
(a) जूनागढ़
(b) गागरोन क़िला
(c) तारागढ
(d) मेहरानगढ़
जवाब : (b) गागरोन क़िला
व्याख्या : यह झालवाड़ के गागरोन क़िले में स्थित है। इसे हजरत मिट्ठे महाबली की दरगाह के रूप में भी जाना जाता है। यहां पर हर वर्ष तीन दिवसीय उर्स भरता है। जिसमें देश के विभिन्न प्रांतों से हजारों जायरीन शिरकत करते हैं। आम दिनों में भी सैकड़ों लोग मजारे मुबारक की जियारत करते हैं। यह सिलसिला सदियों से चला रहा है।
गागरोन दुर्ग काली सिंध नदी और आहु नदी के संगम पर स्थित है। 2013 में राजस्थान के 5 दुर्गों को युनेस्को विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया जिसमें से गागरोन दुर्ग भी एक है।संत पीपा जी का मठ भी, जो संत कबीर के समकालीन के रूप में प्रसिद्ध है, किले के पास स्थित है।इतिहासकारों के अनुसार, इस दुर्ग का निर्माण सातवीं सदी से लेकर चौदहवीं सदी तक चला था। डोड राजा बीजलदेव ने 12वीं सदी में निर्माण कार्य करवाया था और 300 साल तक यहां खिंची राजपूतों ने राज किया।

हिंदुस्तानी वादन ख़याल शैली के 'जयपुर घराने' के प्रवर्तक थे? (राजस्थान मूल्यांकन अधिकारी परीक्षा 2020)
(a) विष्णु भातखंडे
(b) जियाउद्दीन डागर
(c) बहराम ख़ान
(d) मनरंग
जवाब : (d) मनरंग
व्याख्या : ख्याल शैली के जयपुर घराने के प्रवर्तक मनरंग भूपत खां माने जाते है। जयपुर घराना ख्याल गायन शैली का घराना है। मनरंग भूपत खां दिल्ली घराने के प्रवर्तक सदारंग खां के पुत्र थे जो मुहम्मद शाह रंगीला के दरबार में थे।

निम्न में से कौन दादू के शिष्य के नहीं थे? (मूल्यांकन अधिकारी राजस्थान 2020)
(a) सुंदर दास
(b) रज्जब
(c) दयाबाई
(d) जनगोपाल
जवाब : (c) दयाबाई
व्याख्या : संत दया बाई, संत चरणदास की शिष्या थीं। दो बहनें थीं- सहजो बाई और दया बाई। दोनों चरणदास को गुरु मानती थीं। इनके बारे में केवल इतना पता चलता है कि ये मेवात (राजस्थान) की रहने वाली थीं और जाति की वैश्य थीं। लेकिन संत साहित्य में इन दोनों बहनों का योगदान बड़े आदर से स्वीकार किया गया है।दया बाई की भक्ति में वैराग्य की प्रधानता थी। उनका कहना था कि वैराग्य को ही अपना सर्वस्व समर्पण करके, हम प्रभु की निकटता पा सकते हैं।संत चरणदास ने अपनी भक्ति में प्रेम को बहुत महत्व दिया। दयाबाई ने सर्वस्व समर्पण वैराग्य को महत्व दिया। दया ने कहा कि पाप कर्म मत करो, क्योंकि वह ईश्वर से छिपा नहीं रहता। संयम, साधना, तीरथ, व्रत, दान आदि में कुछ नहीं रखा।

निम्नलिखित में से कौन ज़िला आयोजन समिति का अध्यक्ष होता है? (राजस्थान मूल्यांकन अधिकारी परीक्षा 2020)
(a) ज़िला परिषद का प्रमुख
(b) ज़िला कलेक्टर
(c) ज़िला परिषद का मुख्य कार्यकारी अधिकारी
(d) नगर परिषद का अध्यक्ष
जवाब, (a) ज़िला परिषद का प्रमुख
व्याख्या : जिला परिषद का अध्यक्ष जिला योजना समिति का सभापति होता है।जिला योजना समिति पंचायतों तथा नगर पालिकाओं द्वारा तैयार की गई योजनाओं को समेकित करने और सम्पूर्ण जिला के लिए विकास योजना का प्रारूप तैयार करने हेतु प्रत्येक जिले में एक जिला योजना समिति होती है। जिला योजना समिति में जिला परिषद के अध्यक्ष, जिला मुख्यालय पर अधिकारिता रखने वाली नगरपालिका के महापौर या अध्यक्ष, सरकार द्वारा यथा विनिर्दिष्ट समिति के सदस्यों की कुल संख्या के कम से कम 4/5 भाग सदस्य, जो जिला परिषदके निर्वाचित सदस्यों, जिले की नगर पंचायत और नगर निगम तथा नगरपालिका परिषद के निर्वाचित पार्षदों के बीच से उनके द्वारा विहित रीति से ग्रामीण क्षेत्र और जिले के शहरी क्षेत्रों के बीच आबादी के अनुपात में राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशन,

नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण में निर्वाचित होते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा अनुच्छेद राज्यपाल को जानकारी के सम्बंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य के विषय में है? (राजस्थान मूल्यांकन अधिकारी परीक्षा 2020)

(a) अनुच्छेद 165
(b) अनुच्छेद 166
(c) अनुच्छेद 167
(d) अनुच्छेद 168

जवाब : (c) अनुच्छेद 167

व्याख्या : भारतीय संविधान अनुच्छेद 167 राज्यपाल को जानकारी देने आदि के संबंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य निर्धारित करता है जिसके अंतर्गत यह भी निर्दिष्ट है कि किसी विषय को जिस पर किसी मंत्री ने विनिश्चय कर दिया है किंतु मंत्रिपरिषद ने विचार नहीं किया है, राज्यपाल द्वारा अपेक्षा किए जाने पर परिषद के समक्ष विचार के लिए रखे ।

निम्नलिखित में से किस अनुच्छेद का सम्बंध भारत के संविधान की बारहवीं अनुसूची से है? (राजस्थान मूल्यांकन अधिकारी परीक्षा 2020)

(a) अनुच्छेद 243 W
(b) अनुच्छेद 243X
(c) अनुच्छेद 243Y
(d) अनुच्छेद 243 Z

जवाब : (a)

व्याख्या : इस सूची का सम्बंध अनुच्छेद 243W है। भारतीय संविधान की बारहवीं अनुसूची; नगरपालिकाओं की शक्तियों, अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में बताती है। बारहवीं अनुसूची को 1992 के 74वें संशोधन अधिनियम द्वारा संवैधानिक दर्जा दिया गया था। इस सूची में 18 मदों या कामों को शामिल किया गया है जो कि नगरपालिकाओं के कार्य क्षेत्र में आते हैं।

पहली महिला मुख्यमंत्री 1963 में नियुक्त हुईं थीं, उन्होंने किस राज्य का नेतृत्व किया था? (यूपी कॉन्स्टेबल परीक्षा 2019)

(a) उत्तर प्रदेश
(b) मध्य प्रदेश
(c) बिहार
(d) राजस्थान

जवाब : (a), उत्तर प्रदेश

व्याख्या : 1963 में चन्द्रभानु गुप्ता को हटाकर उन्हें मुख्यमंत्री बनाया गया। सुचेता इंद्रप्रस्थ और सेंट स्टीफेंस से पढ़ीं। फिर बीएचयू में लेक्चरार हो गईं। 1936 में सोशलिस्ट लीडर जे बी कृपलानी से शादी हो गई। तो सुचेता ने नाम बदल गया। काम भी। कांग्रेस जॉइन कर लिया। स्वतंत्रता आंदोलन में खूब मेहनत की। 1942 में उषा मेहता और अरुणा आसफ अली के साथ भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुईं।1952 में आचार्य जे बी कृपलानी के नेहरू से संबंध खराब होने पर उन्होंने अलग पार्टी बना ली। कृषक मजदूर प्रजा पार्टी। 1952 के लोकसभा चुनाव में सुचेता इसी पार्टी से लड़ीं और नई दिल्ली से जीत के आईं। फिर 1957 के चुनाव में वे कांग्रेस के टिकट पर जीतीं।

वर्ष 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना किसने की थी? (यूपी कॉन्स्टेबल परीक्षा 2019)

(a) डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(b) जोनाथन डंकन
(c) सर विलियम म्योर
(d) मदनमोहन मालवीय

जवाब, (c) सर विलियम म्योर

व्याख्या : यद्यपि म्योर ने इसकी स्थापना नहीं की थी बल्कि संयुक्त प्रांत के गवर्नर म्योर के नाम पर 1873 में यहां एक कॉलेज खुला बाद में 1887 में यहां विश्वविद्यालय बना दिया गया। यह विश्वविद्यालय भारत का चौथा सबसे पुराना विश्वविद्यालय है। इससे पूर्व मद्रास (1857), मुंबई (1857) तथा कलकत्ता (1857) में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई थी। इलाहाबाद विश्वविद्यालय को बनने में पूरे 12 वर्ष लगे और इसका औपचारिक उद्घाटन 8 अप्रैल 1886 को वायसराय लार्ड डफरिन ने किया।

निम्नलिखित में से उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी कौन है? (यूपी कॉन्स्टेबल परीक्षा 2019)

(a) तोता (b) गौरैया
(c) रामचिरैया (d) सारस

जवाब : (d) सारस

व्याख्या : सर अर्थात् सरोवर के पास इसका प्राकृतवास होने के कारण इसे सारस कहा जाता है। इसके नर और मादा एक साथ जोड़े में रहते हैं तथा लोकमान्यता में आदर्श दम्पत्ति के प्रतीक रूप में देखे जाते हैं।सारस उत्तरी एवं केन्द्रीय भारत, पाकिस्तान तथा नेपाल देश में पाए जाते है। इसके परों का रंग हल्का स्लेटी राख जैसा होता है तथा शिखर हल्के चिकने हरे पंखों से आच्छादित रहता है। ये कठोर परिस्थितियों, जैसे अत्यधिक ठंडक में भी सुगमता से जीवित रहते हैं।

-संकलनकर्ता: जितेश जोशी

पेज 5 का शेष

शतरंज की बिसात पर बिजनेस....

एक्शन और आक्रमण

शतरंज हमें सिखाता है कि आगे बढ़ने और खेल जीतने के लिए हमें अपने मोहरों की सुरक्षा की ज्यादा चिंता नहीं करनी है, बल्कि आगे बढ़कर चाल चलनी है और आक्रमण करना है। जीवन में भी हमें गो गेटर जैसा होना पड़ता है और ऐसे काम के लिए अपनी ताकत झौंकनी पड़ती है, जिसके लिए शायद अभी हम तैयार नहीं हैं। ऐसे साथी को डेट के लिए पूछना पड़ता है, जिसके बारे में आप सोचते हैं कि शायद आप उसके योग्य नहीं है। हमें अपने कंफ़र्ट जोन से बाहर निकलना पड़ता है, संघर्ष करना पड़ता है, एक्शन लेना पड़ता है और तभी हम सफल हो पाते हैं। यहां रक्षात्मक होने से काम नहीं चलता।

नियमों का सिस्टम

आप जीवन में जो कुछ भी करते हैं, उसमें सिस्टम शामिल होता है, जैसे नियमों का सिस्टम, एक्शन के लिए संभावनाओं का सिस्टम, और संभावित परिणामों का सिस्टम। जब हम व्यापार करते हैं, तो हमें व्यापार के कानूनी सिस्टम की जानकारी की जरूरत होती है, हमें इकॉनॉमिक्स के सिस्टम को समझना पड़ता है, जब हम लोगों के साथ काम करते हैं, तो हमें मानव साइकोलॉजी के सिस्टम को समझने की जरूरत होती है। शतरंज का भी पूरा सिस्टम होता है, और पेशेवर खिलाड़ी इस सिस्टम को समझकर ही विजय प्राप्त करते हैं। यही प्रशिक्षण हमें हमारे व्यापार और जीवन में मदद करता है।

आराम में न रहें

शतरंज में अकसर ऐसा होता है कि खिलाड़ी खुद को ऐसी स्थिति में पहुंचा हुआ समझता है, जहां वह जीत के बहुत करीब हो और वह थोड़ा आराम में आ जाता है। तभी उसे पता चलता है कि उसके विरोधी ने ऐसी चाल चल दी है, जिसमें से निकल पाना उसके लिए मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। खिलाड़ी को यह सीखने की जरूरत होती है कि शतरंज का खेल हमेशा चलता रहता है और उसके मोहरे हमेशा स्थान बदलते रहते हैं। इसलिए उसे कभी भी विश्राम में नहीं होना चाहिए। जीवन में भी हर चीज लगातार बदलती रहती है, गति करती रहती है- आर्थिक स्थितियां, रुझान, वित्तीय परिवेश, और संबंध। हो सकता है कि अभी ये सब चीजें हमारे लिए बहुत ही अनुकूल स्थिति में हों, लेकिन अगर हम यह देखकर आराम की मुद्रा में आ जाएं, तो हो सकता है कि स्थितियां बदल जाए और फिर हमें पता न चले कि हमें अब आगे क्या करना है। अच्छे खिलाड़ी की तरह हमें इस पर नजर रखनी होती है कि क्या चल रहा है, सावधान रहना होता है और अपनी लाभ की स्थिति को बनाए रखना होता है

अपशिष्ट प्रबंधन में उज्ज्वल भविष्य

अपशिष्ट पुनर्चक्रण रोजगार सृजन के मामले में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है और कुछ देशों में कई मिलियन लोगों को रोजगार प्रदान करता है...

वालेस जेकब
मैनेजमेंट प्रोफेसर

अपशिष्ट प्रबंधन में अपशिष्ट का पृथक्करण, अपशिष्ट का पुनर्चक्रण, अपशिष्ट को कम करना और अपशिष्ट का सुरक्षित निपटान शामिल है। जैसे-जैसे आबादी बढ़ती है, अर्थव्यवस्थाएं विकसित होती हैं और औद्योगीकरण बढ़ता है, अपशिष्ट की मात्रा भी बढ़ती है। अप्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन पर्यावरण प्रदूषण के मुख्य कारणों में से एक है। लगभग पच्चीस प्रतिशत बीमारियां हमारे प्रदूषित पर्यावरण की वजह से होती हैं।

भारत में चौदह बड़ी नदियां, चवालीस मध्यम नदियां, पचपन छोटी नदियां और कई झीलें, तालाब और कुएं हैं। इन जलाशयों को अपशिष्ट द्वारा उत्पन्न प्रदूषण से बचाने की आवश्यकता है। प्रभावी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए रणनीतिक योजना, संस्थागत क्षमता निर्माण, सार्वजनिक-निजी भागीदारी और सामुदायिक भागीदारी की आवशयकता है। पहले लोग अपशिष्ट पदार्थ को ऐसी सामग्री के रूप में वर्णित करते थे जिसका कोई उपयोग नहीं होता है। अब अपशिष्ट पदार्थ को एक संसाधन के रूप में देखा जाता है। अपशिष्ट को शहरी अपशिष्ट, औद्योगिक अपशिष्ट, बायोमेडिकल अपशिष्ट, परिसंकटमय अपशिष्ट, निर्माण एवं तोड़फोड़ अपशिष्ट और ई-वेस्ट के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। शहरी, औद्योगिक और बायोमेडिकल अपशिष्ट ठोस या तरल रूप में हो सकते हैं। कुछ औद्योगिक अपशिष्ट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं। विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अपशिष्ट को खाद में परिवर्तित करने के लिए एवं अपशिष्ट को ऊर्जा में परिवर्तित करने के लिए अनेक अपशिष्ट प्रसंस्करण संयंत्रों का निर्माण किया गया है।

भारत सरकार ने भारत में अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित कई कानून बनाए हैं, जैसे :
ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016; प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016; ई-वेस्ट प्रबंधन नियम, 2016; जैव-चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016; आदि इनका ज्ञान एक अपशिष्ट प्रबंधक को होना चाहिए।

प्रमुख संस्थान

- इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वेस्ट मैनेजमेंट (भोपाल, बेंगलुरु)
- सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरन्मेंट (सीएसई) द्वारा अपशिष्ट प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।
- अनिल अग्रवाल एनवायरन्मेंट ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (सीएसई की पहल)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट सर्टिफिकेट प्रोग्राम)

INITIATIVE

होण्डा 2व्हीलर्स

इंडिया का डिजिटल प्रशिक्षण

एनएसएस स्वयंसेवी, जिन्होंने कोविड-19 के दौरान भी देश को अपनी सेवाएं प्रदान करना जारी रखा है, उन्हें समर्थन प्रदान करते हुए होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया प्रा. लिमिटेड ने आज घोषणा की है कि इसका सड़क सुरक्षा प्रशिक्षण 'होण्डा रोड सेफ्टी ई-गुरूकुल' देश भर में 23000 से अधिक नेशनल सर्विस स्कीम (एनएसएस) स्वयंसेवियों को घर में सुरक्षित रहते हुए डिजिटल माध्यमों से सड़क सुरक्षा पर सफलतापूर्वक प्रशिक्षण दे चुका है।

देश भर में होण्डा के विशिष्ट सड़क सुरक्षा इन्स्ट्रक्टर्स ने डिजिटल माध्यम से 16 वर्ष से अधिक उम्र के नेशनल सर्विस स्कीम स्वयंसेवियों को सड़क सुरक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रशिक्षण प्रदान किया है। उल्लेखनीय है कि जून 2020 में शुरूआत के बाद मात्र 8 महीनों में होण्डा भारत के 30 से अधिक शहरों और नगरों - पूर्व (धनबाद, सम्बलपुल, मेदिनापुर, गया, दुर्ग) से लेकर पश्चिम (अहमदनगर, नासिक और पुणे); उत्तर (बिलासपुर, गुरूग्राम, उदयपुर, दिल्ली) से लेकर दक्षिण तक (कन्नूर, त्रिवेन्दरम, कालीकट, अर्नाकुलम, थ्रिसूर) के 13 विश्वविद्यालयों और 200 कॉलेजों में एनएसएस स्वयंसेवियों तक पहुंची।

इस अवसर पर प्रभु नागराज, सीनियर वाईस प्रेज़ीडेन्ट- ब्राण्ड एण्ड कम्युनिकेशन्स, होण्डा मोटरसाइकल एण्ड स्कूटर इंडिया प्रा लिमिटेड ने कहा, ''20 सालों से होण्डा भारत में सड़क पर 'हर किसी की सुरक्षा' के दृष्टिकोण के साथ काम कर रही है। सुरक्षा को बढ़ावा देने और सड़क सुरक्षा की आदतें विकसित करने के लिए होण्डा मात्र 8 महीनों में डिजिटल तरीकों से करीब 23000 एनएसएस स्वयंसेवियों को डिजिटल प्रशिक्षण दे चुकी है।

INTERVIEW

ओलंपियाड : व्यापक स्तर पर छात्र प्रतिस्पर्धा का मंच

श्री नितिन गोदावत
मैनेजिंग डायरेक्टर, ओलम्पियाड सक्सेस

क्या आपको लगता है कि ऑनलाइन ओलंपियाड क्लासरूम से बाहर बच्चों को जरूरी अनुभव और प्रयोग करके सीखने की क्षमता को प्रदान करता है?

ऑनलाइन ओलंपियाड की परीक्षाएं प्रयोग आधारित मूल्यांकन क्षमता को बढ़ाती हैं। इस तरह की परीक्षा में ऑडियो और वीडियो बेस्ड राउंड होते है जोकि पारम्परिक पेन और पेपर बेस्ड परीक्षा में ऐसा होना नामुमकिन है। उदहारण के लिए CREST ओलंपियाड ने अपने ऑनलाइन इंटरनेशनल स्पेल बी प्रतियोगिता में एक ऑडियो बेस्ड राउंड आयोजित किया है। इसके अलावा प्रश्नों को जांचने के लिए एडाप्टिव टेस्टिंग मेथोडोलॉजी (अनुकूल परीक्षण पद्धति) का उपयोग किया जा सकता है। इस पद्धति में पूछे गए प्रश्नों का स्तर इस बात पर आधारित होता है कि किसी छात्र ने पिछले प्रश्न का उत्तर सही या गलत दिया है या नहीं।

ओलंपियाड परीक्षाओं में हिस्सा लेने से छात्रों को क्या लाभ होता है?

ओलंपियाड परीक्षाएं छात्रों के विषय की वैचारिक समझ (कॉन्सेप्चूयल अंडरस्टैंडिंग) को मापते हैं। इससे छात्रों को यह जानने में मदद मिलती है कि वह विषय उन्हें वाकई में अच्छा लगता है या नहीं। मैंने बहुत सारे छात्रों को यह कहते सुना है कि वह स्कूल की विज्ञान परीक्षाओं को नही देना पसंद करते है क्योंकि उसमें बहुत ज्यादा थ्योरी रहती है लेकिन उन्हें ओलंपियाड के विज्ञान के प्रश्न को हल करने में अच्छा लगता है क्योंकि इसमें पूछे गए प्रशन बहुत ज्यादा प्रैक्टिकल होते है। काफी समय बाद छात्रों को विषयों को समझने की अच्छी समझ होगी कि उन्हें कौन सा विषय पसंद और कौन सा नही। इसके अलावा इस तरह की परीक्षाओं में छात्र पूरे देश या विश्व के अपने हमउम्र सहपाठियो के साथ प्रतिस्पर्धा करते है। इससे उन्हें अपनी क्षमता को आंकने में मदद मिलती है जिससे वे भविष्य में बेहतर फैसले लेने में सक्षम हो पाते है।

ओलंपियाड की परीक्षाओं में भारतीय छात्रों की हिस्सेदारी कम क्यों है?

मुझे लगता है कि पश्चिमी देशों के छात्रों के मुकाबलें भारतीय छात्रों की ओलंपियाड परीक्षाओं में हिस्सेदारी कम नहीं है। मुझे लगता है कि समस्या भारतीय छात्रों के प्रदर्शन को लेकर है। भारतीय स्कूल व्यवस्था अभी भी रटन विद्या पर आधारित है जबकि ओलंपियाड की परीक्षाओं में विषय के बारें में प्रैक्टिकल आधारित समझ की जरूरत होती है। हालांकि चीजें अब बदल रही है और मैंने बहुत सारे ऐसे छात्रों को देखा है जो HKIMO और सिंगापूर मैथ्स ओलंपियाड में अच्छा प्रदर्शन कर रहे है।

ओलंपियाड परीक्षाओं में छात्रों के विषय की वैचारिक समझ (कॉन्सेप्चूयल अंडरस्टैंडिंग) को मापा जाता है। इससे छात्रों को यह जानने में मदद मिलती है कि वह विषय उन्हें वाकई में अच्छा लगता है या नहीं...

समय-समय पर ओलंपियाड में क्या संशोधन किए जा रहे हैं?

सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह हुआ है कि ओलंपियाड की परीक्षाएं अब ऑनलाइन होना शुरू हो गयी है और छात्र अपने घर से बैठ कर परीक्षा को दे सकते है। परीक्षा अब वेबकैम के जरिये हो रही है। CREST ओलंपियाड इस तरह की आयोजित होने वाली पहली परीक्षा थी और अब बहुत सारे आर्गेनाइजेशन ऑनलाइन परीक्षाएं करा रहे है। सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह है कि ओलंपियाड परीक्षाएं छात्रों को उत्तर कुंजी (एन्स्वेर की) को चुनौती देने और छात्रों को कमजोर क्षेत्र में बेहतर सुधार का मौका देता है।

रिमोट लर्निंग के युग में ओलंपियाड प्रतियोगी परीक्षा क्या शुरुआती प्रयास है?

ओलंपियाड परीक्षाएं अगर प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से देखी जाएँ तो काफी अच्छी होती है। ओलंपियाड परीक्षाओं का पैटर्न (MCQ बेस्ड) फ़ॉर्मेट (प्रैक्टिकल बेस्ड प्रशन) और प्रतिस्पर्धा (कठिनाई का स्तर) IIT-JEE, और NEET जैसी परीक्षाओं की तरह होता है। एक ठेठ स्कूल के माहौल में छात्र कुएं का मेढ़क जैसा होता है और वह मात्र अपने क्लास, सेक्शन या बैच के छात्रों से ही प्रतिस्पर्धा करता है लेकिन ओलंपियाड की परीक्षाओं में छात्रों को व्यापक स्तर पर देश के हमउम्र सहपाठियो के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है।

इटली में नए प्रधानमंत्री ने ली शपथ

इससे पूर्व इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंटे ने 26 जनवरी को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था...

इटली में पूर्व यूरोपीय सेंट्रल बैंक के प्रमुख मारियो द्रागी नए प्रधानमंत्री नियुक्त हुए हैं। उन्होंने 13 फरवरी, 2021 को प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली है। 73 वर्षीय द्रागी 'सुपर मारियो' के रूप में जाने जाते हैं। इटली के राष्ट्रपति से मिलने के बाद द्रागी ने अपने मंत्रिमंडल को नामित किया है। पिछले महीने प्रशासन के पतन के बाद लगभग सभी मुख्य राजनीतिक दलों का उन्होंने समर्थन हासिल किया है।

इससे पूर्व इटली के प्रधानमंत्री ग्यूसेप कोंटे ने 26 जनवरी, 2021 को अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने अपना इस्तीफा राष्ट्रपति सर्जियो मैटरेल्ला को सौंप दिया था। कोंटे ने ऊपरी सीनेट में पूर्ण बहुमत को खो दिया, जब उनकी सहयोगी एक जूनियर पार्टी इटालिया वाइवा पार्टी ने अपना समर्थन वापस ले लिया। इटालिया वाइवा पार्टी का कहना था कि सरकार महामारी और आर्थिक मंदी से ठीक तरीके से निपट नहीं पाई है, इसलिए समर्थन वापस ले लिया गया है।

सुपर मारियो कहे जाने वाले 73 वर्षीय नेता ने ऐसे समय में देश की कमान संभाली है जब देश हफ्तों से राजनीतिक अस्थिरता के दौर में है। कोरोना महामारी ने देश में अब तक 93000 लोगों की जान ले ली है और अभी भी स्वास्थ्य संकट टला नहीं है। मारियो के साथ ही उनके मंत्रीमण्डल ने भी शपथ ली है। मारियो ने अपने मंत्रीमण्डल में पुरानी सरकार में शामिल रहे टेक्नोक्रेट, दिग्गज नेता और मंत्रियों को जगह दी है। मारियो जिस सरकार के मुखिया बने है वह केंद्रीय और वाम विचारधारा वाले दलों का गठबंधन है।

इटली के पूर्व प्रधानमंत्रियों की सूची

प्रधानमंत्री	कब से कब तक
अर्नाल्दो फोर्लानी	1980-1981
सिरियाको दे मीता	1988-1989
ग्यूलियानो अमाटो	1992-1993, 2000-2001
सिल्वियो बर्लुस्कोनी	1994-1995, 2001-2006, 2008-2011
लम्बरटो दीनी	1995-1996
रोमानो प्रदी	1996-1998, 2006-2008
मासिमो डी 'एलेमा	1998-2000
मारियो मोंटी	2011-2013
एनरिको लेटा	2013-2014
मत्तेओ रेन्ज़ी	2014-2016
पाओलो जेंटिलोनी	2016-2018
ग्यूसेप कोंटे	2018-2021

WEEKLYDAIRY

10 फरवरी

पानी की सतह के नीचे काम करने वाली नौसैनिक इलेक्ट्रॉनिक प्रणालियों के क्षेत्र में अनुसंधान के विषय पर भारतीय नौसेना एवं आईआईटी के बीच सम्बन्धों को आगे ले जाते हुए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। यह संबंध 1970 के दशक से बने हैं।

11 फरवरी

भारत खिलौना मेला-2021 की वेबसाइट www.theindiatoyfair.in का संयुक्त रुप से केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', केंद्रीय वस्त्र मंत्रीस्मृति जुबिन ईरानी और केंद्रीय वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने संयुक्त रूप से उद्घाटन किया।

12 फरवरी

नौसेना ने कोलकाता के मैसर्स टीटागढ़ वैगन लि. के साथ पांच डाइविंग सपोर्ट क्राफ्ट (डीएससी) के निर्माण के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर किए हैं। एक बार कमीशन होने के पश्चात डीएससी कमांड क्लीयरेंस डाइविंग टीमों सीसीडीटी के अभियान की ज़रूरतों को पूरा करेंगी।

खेल

■ टोक्यो ओलंपिक का टिकट कटा चुके राजस्थान के 18 वर्षीय दिव्यांश सिंह पवार ने राष्ट्रीय निशानेबाजी चयन ट्रायल्स में पुरुषों की 10 मी. एयर राइफल टी4 स्पर्धा विश्व रिकॉर्ड के साथ जीती।

■ इथोपिया की गुडाफ सेगाय ने उत्तरी फ्रांस में 1500 मीटर दौड़ में नया इंडोर विश्व रिकॉर्ड बनाया। सेगाय ने महिला वर्ग की 1500 मीटर दौड़ में तीन मिनट और 53.09 सेकंड के समय के साथ जीती। उन्होंने सात साल पहले बनाया गया हमवतन जिंजेबे दिबाबा (3:55.17 सेकंड, 2014) का कीर्तिमान ध्वस्त किया।

■ पैरा एथलीट देवेंद्र कुमार और निमिशा सुरेश सी ने 12वीं फाजा अंतरराष्ट्रीय विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रां प्री में स्वर्ण पदक जीते। भारत ने पहले दिन छह पदक जीते। देवेंद्र चक्का फेंक एफ44 वर्ग में अपने दूसरे प्रयास में 50.61 मीटर की दूरी नापकर चैंपियन बने जबकि प्रदीप (41.77 मीटर) ने रजत जीता।

■ सिमरन ने 12वीं फाजा अंतरराष्ट्रीय विश्व पैरा एथलेटिक्स ग्रां प्री में महिलाओं की 100 मीटर टी13 स्पर्धा में 12.74 सेकंड के साथ स्वर्ण पदक जीता।

■ बेंजामिन पावर्ड (59वें मिनट) के एकमात्र गोल के दम पर बायर्न म्यूनिख ने टिग्रेस को 1-0 से शिकस्त देकर फीफा क्लब वर्ल्ड कप का खिताब जीत लिया। यह पिछले नौ माह में क्लब की छठी ट्रॉफी है। इसी के साथ बायर्न एक साल में रिकॉर्ड छह खिताब जीतने वाली दूसरी टीम बन गई।

नियुक्ति

■ असम सरकार एशियाई खेलों की चैंपियन फर्राटा धाविका हिमा दास को पुलिस

उपाधीक्षक (डीएसपी) नियुक्त करेगी। मुख्यमंत्री सर्बानंद सोनोवाल की अध्यक्ष में हुई कैबिनेट बैठक में यह फैसला किया गया। इसके साथ ही ओलंपिक, एशियाई और राष्टमंडल खेलों के पदक विजेता राज्य के खिलाड़ियों को विभिन्न विभागों में क्लास वन अधिकारी के रूप में नियुक्त किया जाएगा। बीस वर्षीय हिमा ने 2018 आईएएएफ विश्व अंडर-20 चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता था। वह वैश्विक स्तर पर किसी भी स्तर पर ट्रैक एंड फील्ड में सोना जीतने वाली पहली भारतीय महिला एथलीट हैं। ढिंग एक्सप्रेस के नाम से मशहूर हिमा (50.79 सेकंड) के नाम पर 400 मीटर दौड़ का राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है

■ दिल्ली कैपिटल्स के सीईओ धीरज मल्होत्रा बीसीसीआई के नए खेल विकास महाप्रबंधक होंगे। मल्होत्रा पूर्व भारतीय क्रिकेटर सबा करीम की जगह लेंगे।

निधन

■ बॉलीवुड एक्टर ऋषि कपूर और रणधीर कपूर के भाई राजीव कपूर का 9 फरवरी की दोपहर दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। राजीव ने राम तेरी गंगा मैली जैसी तमाम फिल्मों में काम किया था।

■ बच्चों और लड़कियों की शिक्षा का अलख जगाने वाले स्वतंत्रता सेनानी दर्शनलाल जैन का निधन हो गया। सामाजिक कार्यों के मद्देनजर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने उन्हें देश का तीसरा सर्वोच्च सम्मान पदम भूषण से नवाजा था। वे विलुप्त सरस्वती नदी को धरातल पर लाने के लिए भी लंबे समय से प्रयासरत थे।

-सौरभ सिंह

विज्ञान

■ भारतीय और ब्रिटेन के वैज्ञानिकों ने मिलकर भारत मौसम के पूर्वानुमान के लिए एक नई प्रणाली विकसित की है। इससे भारत में किसानों को मानसून के मौसम में अपेक्षित बदलाव के शुरुआती पूर्वानुमान की जानकारी मिल सकती है। इससे मौसम के कारण फसलों को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है। यूरोपियन सेंटर फॉर मीडियम-रेंज वेदर फोरकास्ट (ईसीएमडब्ल्यूएफ) के शोधकर्ताओं द्वारा बनाई गई वैश्विक मौसम पूर्वानुमान प्रणाली के इस्तेमाल से इस बात का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गर्मी के मौसम में मानसून कब दस्तक देगा और कितने समय के लिए रहेगा।

■ भूकंप की घटनाओं की निगरानी के लिए देशभर में स्थापित निगरानी स्टेशनों से प्राप्त रिपोर्ट से पता चला है कि बीते वर्ष के दौरान देशभर में तीन और उससे अधिक परिमाण के कुल 965 भूकंप दर्ज किए गए हैं। इनमें से 13 भूकंप राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) और आसपास के इलाकों में दर्ज किए गए हैं।

WEEKLYDAIRY

13 फरवरी

राष्ट्रपति ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 217 के खंड (1) द्वारा प्रदत्त शक्ति का उपयोग करते हुए, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति पुलिगोरू वेंकट संजय कुमार को मणिपुर उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया है।

14 फरवरी

प्रधानमंत्री ने चेन्नई में रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन, विकसित और निर्मित अत्याधुनिक अर्जुन टैंक राष्ट्र को समर्पित किया। इसके अलावा उन्होंने तमिलनाडु के चेन्नई में 80 अरब रुपये से अधिक की परियोजनाओं का भी शुभारंभ किया।

15 फरवरी

वस्त्र मंत्री स्मृति ईरानी ने वाणिज्यिक पटसन बीज वितरण योजना की शुरुआत की। भारतीय पटसन निगम ने 2021-22 के लिए एक हजार मीट्रिक टन प्रमाणित पटसन बीजों के वाणिज्यिक वितरण के लिए पिछले वर्ष राष्ट्रीय बीज निगम के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किये थे।

अमर ज्ञान वर्ग पहेली-0546

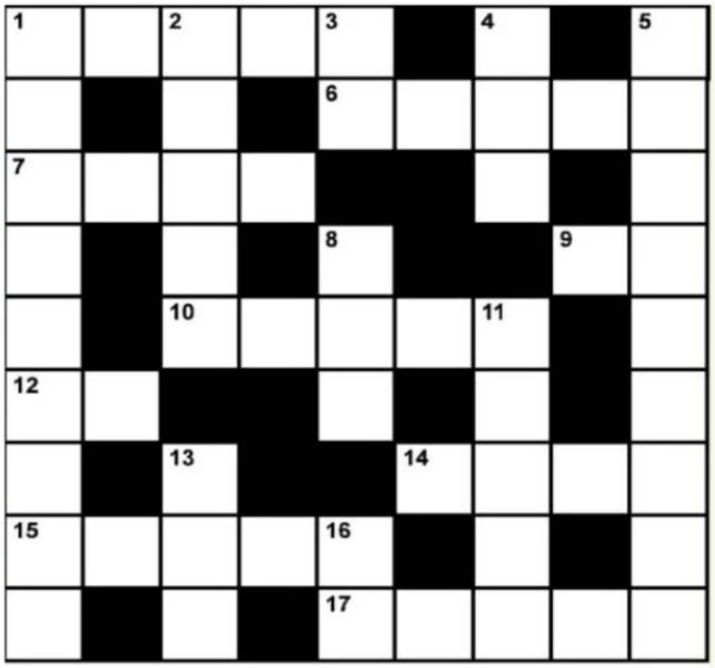

बाएं से दाएं: 9/37

1. भावपूर्ण होना; मधुर होना; मीठा होना; रसीला होना (3,2)
6. बहुत पौरुष; महाशक्ति; बहुत वीरता (5)
7. गोंद; लाख; लाह (4)
9. कठोर; दृढ़; काले रंग की एक धातु; धोबी की इस्तरी; अस्त्र; हथियार (2)
10. साहित्य में वियोगी की दसवीं और अंतिम दशा जिसमें वह परम दुखी होकर प्राण त्याग देता है (5)
12. एक देवयोनि; कुबेर के धनागार के रखवाले; कोषरक्षक (2)
14. चीन की प्राचीन राजधानी; चीन में यांग्त्से नदी के अंतिम भाग में स्थित एक चीनी नगर (4)
15. 2013 से 2018 तक कर्नाटक के मुख्यमंत्री (5)
17. तारों भरा आकाश; नक्षत्रों के घूमने का मार्ग; नक्षत्रों का परिक्रमा पथ (5)

ऊपर से नीचे: 9/41

1. 12 जुलाई 1917 को जन्मे छोटे साहब के नाम से विख्यात बिहार के नेता जिनका 4 सितंबर 2006 को निधन हो गया; बिहार के औरंगाबाद लोकसभा क्षेत्र से सात बार सांसद रहे एक नेता (3,4,2)
2. पश्चिम और चीन के मध्य रेशम मार्ग पर स्थित उज्बेकिस्तान का एक महत्वपूर्ण नगर जो तैमूर द्वारा स्थापित 'तैमूरी साम्राज्य' की राजधानी भी रहा (5)
3. प्रवासी भारतीयों की पृष्ठभूमि पर बनी 1986 में आई कुमार गौरव और संजय दत्त की फिल्म; ख्याति; प्रसिद्धि (2)
4. सर्वशक्तिमान सत्ताधारी; सत्ताधारी जिसके ऊपर कोई और प्रभु या सत्ताधारी न हो; सावरेन (3)
5. 1960 में आई एस डी बर्मन के संगीत से सजी मोहन सहगल निर्देशित किशोर कुमार, सईदा, नज़ीर हुसैन, सबिता चटर्जी, लीला चिटनीस की फिल्म; स्वयं से अच्छा काम कोई नहीं कर सकता; दूसरों पर निर्भर न रहना (3,2,4)
8. पाकिस्तान के बलोचिस्तान प्रांत के किला अब्दुल्लाह जिले का एक प्रमुख नगर जो स्वतंत्रता से पहले कालीन, खुबानी, गिलास (चेरी), हींग आदि के व्यापार का प्रमुख केंद्र था; रौनक वाला शहर; गुलजार बस्ती; बगीचा (3)
11. आधार तंत्र; प्रशासन व्यवस्था तंत्र; शासन पद्धति; शासन प्रबंध (5)
13. पंजाब में झेलम से लेकर चेनाब नदी तक फैले राज्य के शासक जिनका विश्व विजय पर निकले सिकंदर से टकराव हुआ (3)
16. वाहन; विमान; जहाज (2)

- हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली

ANSWER

अमर ज्ञान वर्ग पहेली 0545

1 दि	व्य	2 क	व	3 च	■	4 द्वा	■	5 द
स	■	लि	■	6 ल	ग्न	प	त्रि	का
7 पु	रा	का	8 ली	न	■	र	■	रां
र	■	■	ला	■	9 उ	■	■	त
■	10 जो	खि	म	में	प	ड़	ना	■
11 अ	■	■	य	■	द्र	■	■	12 दा
ल्वा	■	13 नी	■	14 अ	व	15 मू	ल्य	न
16 नि	ग	म	क	र	■	ल	■	दे
या	■	च	■	17 ब	ह	क	जा	ना

रोचक शब्द पहेली को हल करना किसी मनोरंजन से कम नहीं है। तो आप भी कीजिए अपना बुद्धि परीक्षण...

ENGLISH GYAN

Towards Better ENGLISH - 74

'Expect' and 'hope':

'Expect' means 'to think or believe that something will happen'. It is mental rather than emotional.

- Our company is expecting 20 percent net profit this year.
- My flight is expected to arrive at 1500 hrs.

'Hope' means 'to want something to happen' and think that it is possible. There is an emotional reason for hoping for something.

- All we can do in this condition is just wait and hope.
- I hope he's got this news.

Word /phrase of the week:
Cynosure- A person or thing that is the center of attraction or attention especially because of its beauty or brilliance

- His rapidly increasing wealth has made him a cynosure in political circles.
- Due to her brilliance in this matter, she was the cynosure of all eyes.

Interesting Fact:
Origin of the word 'Hazard'- Origin of the word 'Hazard'- This word for danger or risk is thought to have its origins in 13th-century Arabic, in which the word 'al-zahr' referred to the dice used in various gambling games. There was a big element of risk inherent in these games, not just from the gambling itself but from the danger of dishonest folk using weighted dice.... -Oxford Royale Academy (UK)

डॉ. विनोद कुमार मंगवानी
सह-प्राध्यापक (अंग्रेजी), मर्चेंट नेवी संस्थान, पुणे

क्या आप जानते हैं?

भारत की गणित संसार को दी जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण खोज कुछ नही कहे जाने वाले शून्य की है। इस मामूली सा प्रतीत होने वाला अंक आज बड़े से बड़े अंको को स्थानीय मान के हिसाब से लिखने में कारगर है। शून्य क्या है और इसकी खोज कैसे हुई ये ठीक –ठीक कहना तो संभव नही है परन्तु यह एक विशुद्ध भारतीय खोज है जिसने विश्व को गिनना सिखाया। चाहे इतालवी में नलिटा कहें, स्वीडेन की भाषा में नोल, स्पेनिश में सेरो, डच में नल, या फ़िनलैंड की भाषा में नोल्ला या अरबी में सिफर मतलब एक ही है संस्कृत भाषा ने निकला शून्यम से बना शून्य।

आज भी अधिकांशतः लोग शून्य के खोजकर्ता के रूप में आर्यभट को जानते हैं पर मजेदार बात ये है की स्वयम आर्यभट को भी इसका भान नही रहा होगा की उन्हें लोग उनकी खोज से ज्यादा उस खोज के लिए याद करेंगे जो उन्होंने की ही नही। आज कई पुस्तकों और सोशल मीडिया में भ्रमित करने वाले ऐसे लेख मौजूद है जो कही सुनी बात पर विश्वास करते हुए आर्यभट को खोजकर्ता के रूप में सिद्ध करते हैं।

गणित में सबसे ज्यादा योगदान यूनानियों और रोमन का रहा , परन्तु इनमे से किसी भी प्रणाली में शून्य की संकल्पना नही की गयी और बिना शून्य के बड़ी संख्या लिखने में तो वो सक्षम थे पर स्थानीय मान के अभाव में हर कोई उसका अलग अर्थ निकाल सकता था। भारत में यूं तो आचार्य पिंगल ने अपनी छंदशास्त्र में शून्य को परिभाषित करने का प्रयास किया है और इसे पहली खोज के रूप में देखने में कोई गुरेज नही है. लगभग 200 ईशापूर्व लिखी इस पुस्तक में उन्होंने शून्य को यूं परिभाषित किया

गायत्रे षड़संख्यामर्धेऽपनीते द्वयड। के अवशिष्ट स्रयस्तेषु ।

रूपमपनीय द्वयड:काधः शुन्यं स्थाप्यम् ।।

अर्थात एक गायत्री छंद में 6 शब्द होते हैं इनके आधे (3) में से 1 घटा परिणाम को पुनः आधा कर इसमें एक घटाने से शून्य की प्राप्ति होती है।

0 = ½ {1/2 of 6 – 1} - 1

शून्य की परिकल्पना तो इससे भी पुरानी है। ऋग्वेद में ऐसे व्यक्ति जो मौजूद या ना दिखने वाली चीजों को खोजने की चाह रखता हो को शून्यैषी कहा जाता था। *शून्यैषी निर्ऋते याजगन्धोत्तिष्ठाराते प्रपत मेह रंस्था ।। अथर्ववेद 14.2.19 ।।*

शून्य के बारे में पाणिनि ने अपने अष्टअध्यायी में भी बताया है - अदर्शनं लोपः । (1.1.60)

यदि वक्षाली पोथी की बात की जाये तो शारदा लिपि में लिखी इस पुस्तक में शून्य संख्या को लिखने के लिए एक मोटे बिंदु का उल्लेख भी मिलता है परन्तु ये ठीक ठीक अनुमान लगा पाना की लगभग 300 ईशापूर्व में लिखी इस पुस्तक में शून्य किसी स्थानीय मान के साथ लिखा गया होगा कहना कठिन है।

मोटे बिंदु में शून्य दिखाता बक्षाली पोथी

पर यह बात सरासर गलत है कि आर्यभट ने शून्य की खोज की। उनकी पुस्तक आर्यभटीय में भी इस बात का कोई जिक्र नही है। हां लगभग 650 ईस्वी में भारतियों ने शून्य का उपयोग एक अंक के रूप में करना शुरू किया। ब्रह्मगुप्त ने अपनी पुस्तक ब्रह्मस्फुट सिद्धांत में इसका जिक्र किया है और शून्य पर आधारित कई नियमों का भी उल्लेख किया है जैसे शून्य में किसी संख्या को जोड़ने या किसी संख्या से शून्य हटाने पर कोई परिवर्तन नही होता है। किसी संख्या को शून्य से गुणा करने पर परिणाम शून्य होता है। परन्तु ब्रह्मगुप्त से पहले किसी ने इसका कोई उल्लेख नही किया है। ग्वालियर में 876 इसवी में मिले शिलालेख में 270 लिखा जाना इस समय तक शून्य के भारत में पूर्णरूप में विकसित अंक प्रणाली का उल्लेख करता है। 12वीं सदी में फिबोनाची द्वारा लिखी पुस्तक – अंको की कहानी ने पुरे विश्व को भारतीय अंकप्रणाली से अवगत कराया।

राजा जयवर्धन के द्वारा बनाये चतुर्भुज मन्दिर का शिलालेख जो आजकल जीरो मदिर के नाम से जाना जाता है ।

-डॉ. राजेश कुमार ठाकुर

INTERNSHIP ALERT

ऑनलाइन ट्रेनिंग (कोडिंग) इंटर्नशिप
कंपनी - कैंप K12
कहां - वर्क फ्रॉम होम
वेतन - 20,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन- https://bit.ly/AU-2305
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

ऑपरेशन्स इंटर्नशिप
कंपनी - नाइन्थसेम
कहां - वर्क फ्रॉम होम
वेतन - 4,000-6,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2306
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

मशीन लर्निंग इंटर्नशिप
कंपनी - बॉटसप्लाई
कहां - वर्क फ्रॉम होम
वेतन - 10,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2307
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

डेटा एंट्री इंटर्नशिप
कंपनी - प्रोस्ट टेक्नोलॉजीस
कहां - वर्क फ्रॉम होम
वेतन - 10,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2308
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

सोशल मीडिया एंड PR इंटर्नशिप
कंपनी - ब्रेकआउट
कहां - वर्क फ्रॉम होम
वेतन - 15,000-20,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2309
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

मोबाइल ऍप डवलपमेंट इंटर्नशिप
कंपनी - टेलीसेवक
कहां - लखनऊ
वेतन - 6,000-8,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2310
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

ऑपरेशन्स इंटर्नशिप
कंपनी - नैवो3D सोलूशन्स
कहां - लखनऊ, बाराबंकी, कानपुर देहात
वेतन - 3,000 रुपये प्रति माह
यहां करें आवेदन - https://bit.ly/AU-2311
आवेदन की अंतिम तिथि - 21 मार्च 2021

SCHOLARSHIP ALERT

जयपुरिया स्कूल ऑफ बिजनेस का अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

गाजियाबाद में 13 फरवरी 2021 को आयोजित जयपुरिया स्कूलऑफ बिजनेस के अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में व्यसाय प्रमुखों और शिक्षा जगत के प्रमुख विचारकों ने डिजिटल युग में व्यवसाय और कार्यबल को लेकर रोचक सूझबूझ साझा की।'री-इमैजिनिंग बिजनेस एण्ड री-स्किलिंग वर्कफोर्स फॉर इमर्जिंग डिजिटल ईकोसिस्टम' विषय पर इस वर्चुअल कान्फ्रेंस में मुख्य वक्तव्य सौरभ गोयल ने दिया जो हैवेल्स इंडिया लि. के प्रेजिडेंट हैं। इस अवसर पर अतिथि संबोधन रवीचंद्रण वेंकटरमन का था जो एलाइव कंसल्टिंग और स्मृति एकेडमी के फाउंडर सीईओ हैं। सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. उतियो रायचैधरी थे जो डेनवर युनिवर्सीटी, अमेरिका में अंतरराष्ट्रीयकरण के वाइस-प्रोवोस्ट हैं। आयोजन का आरंभ सरस्वती वंदना से हुआ और इसके बाद सेठ आनंदराम जयपुरिया ग्रुपऑफ एडुकेशनल इंस्टीट्यूशंस के अध्यक्ष शिशिर जयपुरिया ने स्वागत् संबोधन दिया। ''सभी क्षेत्रों के व्यवसायों को प्रौद्योगिकी विकास को लेकर आंखें खोल कर रखना आवश्यक है क्योंकि ये कार्पोरेट परिदृश्य बदल देते हैं। साथ ही, कार्यबल को डिजिटल युग के बदलते व्यवसाय परिवेश के अनुसार दुबारा कौशल प्रदान करना जरूरी है। सही अर्थों में इसके बाद ही समाज का विकास और सच्ची प्रगति होगी, '' शिशिर जयपुरिया ने अपने संबोधन में कहा। सौरभ गोयल का संबोधन मुख्यतः डिजिटल क्रांति पर केंद्रित था जो कोविड-19 के परिणामस्वरूप चारों ओर दिख रही है। ''हम जिस डिजिटल क्रांति की उम्मीद सीईओ या सटीओ से करते थे वह वस्तुतः कोविड की वजह से आ गई है। आज के व्यवसाय प्रमुख यह मानते हैं कि आमदनी बढ़ाने में मुख्य भूमिका डिजिटल तकनीक की होगी। आज 80 फीसद से अधिक व्यवसाय प्रमुख डिजिटल तकनीक अपना रहे हैं और 65 फीसद उनके बजट में डिजिटल तकनीक पर खर्च बढ़ाने के लिए तैयार हैं।'' रवीचंद्रण वेंकटरमन ने विमर्श को बढ़ाते हुए साइबर-फिजिकल युग पर अपनी बात रखी जो तेजी से उभर रहा है। उन्होंने बताया, ''यह दुनिया मशीन युग से आगे बढ़ कर पहले सूचना युग और अब साइबर फिजिकल युग में पहुंच गई है। इस बदलाव को बढ़ावा देते हैंः मोबिलीटी, डाटा, इंटरनेटऑफ थिंग्स और कंटेंट का विकास। फ्यूचर-रेडी संगठनों को आगे ले जाने में स्पीड-टू-वैल्यू और रेडिकल कोलेबरेशन अहम होंगे।

ABV-IIITM ग्वालियर की जूनियर रिसर्च फेलोशिप

विवरण : एबीवी-इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट ग्वालियर, भारत, बीटेक/बीई/एमएससी/एमटेक/एमएस/ एमई डिग्री धारकों से एबीवी-आईआईआईटीएम ग्वालियर डीएसटी -एसईआरबी जूनियर रिसर्च फेलोशिप 2021 के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। फेलोशिप प्रोजेक्ट टाइटल "डिज़ाइन एंड मॉडलिंग ऑफ अल्ट्रा-स्केल्ड कॉपर-ग्राफीन हाइब्रिड ऑन-चिप इंटरकनेक्ट फॉर लो पावर एंड हाई-स्पीड आईसी एप्लीकेशन विद मशीन लर्निंग" के लिए है।

मानदंड : यह फेलोशिप उन उम्मीदवारों को दी जाती है जो ईसी (इलेक्ट्रॉनिक्स और कम्युनिकेशन)/सीएसई (कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग)/इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग/आईटी (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी)/डिग्री या समकक्ष में एमटेक/एमएस/एमई या समकक्ष हैं। वे ईसी/सीएसई/आईटी/ईई या समकक्ष में बीटेक/बीई/एमएससी हों। उन्हें बीई/बीटेक या एमई/एमटेक में प्रथम श्रेणी या समकक्ष के साथ संबंधित ब्रांच में बीई/बीटेक और एमई/एमटेक होना चाहिए।

इनाम/लाभ : चिकित्सा भत्ते के साथ 28,000 रुपये तक प्रति माह

अंतिम तिथि : 28 फरवरी 2021

आवेदन कैसे करें : केवल ईमेल द्वारा।

आवेदन लिंक : www.b4s.in/au/AGM7

आईआईटी इंदौर की इंजीनियरिंग जूनियर रिसर्च फैलोशिप 2021

विवरण :

इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, इंदौर मास्टर डिग्री धारकों से आईआईटी इंदौर डिसिप्लिन ऑफ सिविल इंजीनियरिंग जूनियर रिसर्च फैलोशिप 2021 के लिए आवेदन आमंत्रित करता है। फैलोशिप एक प्रोजेक्ट के लिए है, जिसका शीर्षक है, "रिमोट सेंसिंग और फील्ड-बेस्ड एप्रोच का उपयोग करके सॉइल ऑर्गेनिक कार्बन सीक्वेस्ट्रेशन का क्वांटिफिकेशन"।

मानदंड : फैलोशिप उन उम्मीदवारों के लिए खुली है जिनके पास संबंधित क्षेत्रों में मास्टर डिग्री या इंजीनियरिंग की किसी भी शाखा में बैचलर डिग्री है। क्षेत्र संग्रह डेटा और प्रकाशन में पूर्व ज्ञान होना जरूरी है। साथ ही, नेट / गेट वाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जाएगी।

इनाम/लाभ : डीएसटी नॉर्म्स के अनुसार रू 25,000 प्रति माह

अंतिम तिथि : 28 फरवरी 2021

आवेदन कैसे करें : केवल ईमेल द्वारा।

आवेदन लिंक : www.b4s.in/au/ICE5